Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

प्रगतिवादी काव्य में सामाजिक यथार्थ

Seema*

M.A. B. Ed. Lecturer of Hindi, Singh Ram Memorial Senior Secondary School, Umra, Hisar

शोध-लेख – अधिकांश विद्वानों के अनुसार प्रगतिशील आंदोलन सन् 1936 में प्रारंभ हुआ। 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुई जिसका प्रथम अधिवेशन प्रेमचंद के सभापतित्व में हुआ।

साहित्य केवल मन बहलाव की चीज नहीं है अपितु मनोरंजन के सिवा उसमें और भी कुछ उद्देश्य है। अब वह केवल नायक-नायिका के संयोग की कहानी नहीं सुनाता है अपितु जीवन की समस्याओं पर भी विचार करता है और हल करने का सुझाव देता है। अब वह स्फूर्ति और प्रेरणा के लिए अद्भुत आश्चजनक घटनाएँ नहीं ढूढ़ता और किन्तु उसे उन प्रश्नों में दिलचस्पी है जिससे समाज या व्यक्ति प्रभावित होते हैं। उसकी उत्कृष्टता की वर्तमान कसौटी अनुभूति की वह तीव्रता है जिससे वह हमारे भावों और विचारों में गति पैदा करता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि छायावाद की समाप्ति पर 1936 के आसपास सामाजिक चेतना को साथ लेकर प्रगतिवादी युग का आरंभ हुआ। छायावाद ने जीवन सौंदर्य के संगममरमरी ताज को बना तो दिया किन्तु वह आंखों को ही तृप्त कर सका। उसके झरोखों से मंदिर बयार तो आ सकी, पर उसका स्पर्श मात्र सिहरन पैदा कर सभा जीवन की अदृश्य शक्तियों को जागृत कर यर्थाथ को झेलने की हिम्मत न दे सका। छायावादियों का स्वप्न सत्य के ताप से झुलसने लगा और धीरे-धीरे भीतर-ही-भीतर जनमानस में एक सुगबुगाहट हुई। एक नया मानवतावाद जन्मा, जीवन यथार्थ की ठोस धरती पर आ खड़ा हुआ और इसे अभिव्यक्ति देने वाला काव्य प्रगतिवाद कहलाया। प्रगतिवादी काव्य के विकास में राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश, माक्र्सवादी दर्शन, फ्रॉयडीय चेतना और छायावाद की जीवन शून्य व्यक्तिवादी कविता के प्रति प्रतिक्रिया भाव भी सहायक रहा। प्रगतिवाद, सामाजिक यर्थाथवाद के नाम पर चलाया गया। यह वह साहित्यिक आंदोलन है जिसमें जीवन और यथार्थ के वस्तु सत्य को उतर छायावाद काल में प्रश्रय मिला और जिसने सर्वप्रथम यथार्थवाद की ओर समस्त साहित्यिक चेतना को अग्रसर होने की प्रेरणा दी। कहा जा सकता है कि इस काल में कवियों की मुख्य दृष्टि धरती और समाज की ओर रही। प्रगतिवाद ने वर्गभेद की खाई को पाटने का काम तो किया ही, मनुष्यों को सामाजिक और राजनैतिक भूमिका प्रदान की। प्रगतिवादी कवियों ने बाह्य जगत की पद्धति, रीति नीति और मानवीय समस्याओं को सही अर्थ में समाजोन्मुखी करने का काम किया है। प्रगतिवादी कवियों ने यथार्थ के धरातल पर कार्य किया।

मुख्य शब्द - कसौटी, अनुभूति, सिहरन, सुगबुगाहट, स्वाधीनता, आंदोलित।

----------X----------

प्रगतिवादी कवियों में पंत, निराला, दिनकर, नवीन, नागाजुर्न, केदार, धूमिल, रामविलास शर्मा, मुक्तिबोध, रांघेय राघव, त्रिलोचन, आदि महान कवियों की गणना की जाती है। इन कवियों ने अभिव्यक्ति के क्षेत्र में सरल से सरल भाषा लिखने तथा जन मन तक के भावों को सहज ढंग से प्रस्तुत करने वाली वाणी का सहारा लिया। इन कवियों ने अपने काव्य द्वारा सामाजिक चेतना को जागृत किया और अपनी समाजवादी विचारधारा के द्वारा जन मानस को जागरूक किया। अतएव इस युग की कविता सपनों में नहीं पल सकती। उसकी जड़ो को अपनी पोषण सामग्री धारण करने के लिए कठोर धरती का आलय लेना पड़ रहा है।

पंत ने वर्तमान मानव को पूर्ण नहीं माना क्योंकि आज का मानव जाति, वर्ण, संस्कृति और समाज के खंड़ों में विभाजित है इसलिए उसमें मानवता का संचार करना आवश्यक है वे कहते भी हैं-

"आज मनुज को खोज निकालो।

जाति, वर्ण, संस्कृति, समाज से

मूल व्यक्ति को फिर से बचा लो।

राजा, प्रजा, धनी और निर्धन

www.ignited.in

सभ्य, असंस्कृत, सज्जन-दुर्जन

भव मानवता से सबको भर

खण्ड मनुज को फिर से ढालो।।"1

पंत की भांति निराला की कविताओं में प्रगतिवाद का मुख्य स्वर दिखाई देता है। उन्होंने भी समाज के गंभीर मुद्दों को अपने काव्य में स्थान दिया। निराला की 'परिमल' काव्य संग्रह की 'भिक्षुक', 'विधवा', 'बादल राग', 'शिवाजी का पत्र' आदि कविताओं में नवीन क्रांति का चित्रण है। 'भिक्षुक' और 'विधवा' में समाज के शोषित और पददलित अंगो के प्रति कवि ने सहानुभूति व्यक्त की है और जीवन की यथार्थ चित्रण किया है।

"वह आता

दो टूक कलेजे का करता पछताता पथ पर आता

पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक

चल रहा लकुटिया टेक,

मुट्ठीभर दाने को भूख मिटाने को

मुंह फटी पुरानी झोली का फैलाता

दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।"2

निराला ने अपनी 'कुकरमुत्ता' रचना में कुकुरमुत्ता को सर्वहारा तथा गुलाब को पूंजीवादी काव्य में प्रतीक के रूप में स्थान दिया है। प्रगतिवादी काव्य में 'कुकुरमुत्ता' एक सशक्त कृति के रूप में सामने आई। इसमें प्रतीकों के माध्यम से सामाजिक जीवन के जो व्यंग्य चित्र प्रस्तुत किए वे उनकी उत्कृष्ट काव्य कला के परिचायक है।

"अबे सुनबे गुलाब

भूल मत पाई खुशबू रंगो आव

खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट

डाल पर इतना इतराता कैपिटलिस्ट"3

दिनकर जी की गणना भी प्रगतिवादी कवियों में की जाती है। इनको राष्ट्र कवि कहा जाता है दिनभर छायावाद के चितंनशील कवि है। ये भी सामाजिक समस्याओं के प्रति प्रगतिशील दृष्टि रखते है। दिनकर के काव्य में उन विषमताओं का वर्णन किया है जो शोषित और निर्धनों को ऊपर नहीं उठने देती। कठिन श्रम के पश्चात भी उन लोगों को भोजन और वस्त्र जैसी सुविधाएँ प्राप्त नहीं होती हैं।

नारी की दुर्दशा का चित्रण कर इन्होंने नारी के प्रति आस्था प्रकट की। उन्होंने नारियों को अपने अधिकारों की रक्षा के लिए उकसाया है। दिनकर ने समाज में चल रही सभी विसंगतियों को यथार्थ के रूप में प्रस्तुत किया है जैसे नकली दवाइयों के व्यापारियों तथा पुलिस अधिकारियों के भ्रष्ट चरित्र के संदर्भ में वे लिखते हैं कि -

"अजब हमारा यह तंत्र है।

नकली दवाइयों का व्यापारी स्वतंत्र है

पुलिस करे जो कुछ, पाप है।

चोर का जो चाचा है, पुलिस का भी बाप है"4

केदारनाथ अग्रवाल जी का काव्य भी प्रगतिवादी चेतना के लिए जाना जाता है। केदार जी ने देश के किसान, गरीब, मजदूर, और शहर के निम्न वर्ग के साथ-साथ सर्वहारा वर्ग को निकट से देखा है और उसी को अपनी काव्य की पक्तियों में पिरोया, 'हे मेरी तुम' कविता में वे लिखते हैं-

"डंक मार संसार न बदला

प्राण-हीन पतझार न बदला

बदला शासन देश न बदला

राजतंत्र का भेष न बदला।"5

केदारनाथ ने अपने काव्य में पूंजीवादी अर्थ व्यवस्था के कारण बढ़ी हुई मंहगाई का चित्रण किया जिसकी मार गरीबों पर पड़ती है। बहुत ही सहज और सत्य तरीके से इन्होंने अपने काव्य में मंहगाई का चित्रण किया है।

"नव चलता घर

अब नहीं चलता चलाए

ठेलने ढालने से

इस महंगाई में

कमाई पड़ गई खटाई है।"6

www.ignited.in

किसानों की असहयता का चित्रण भी वास्तविक रूप से किया। शोषक व सर्वहारा के संघर्ष में सर्वहारा भी विजय, मानव प्रेम, समाजवादी और यर्थाथवादी दृष्टिकोण दी इनमें काव्य में प्रमुख विषय रहे हैं।

सामाजिक यथार्थ को व्यंग्य के रूप में प्रस्तुत करने का श्रेय नागार्जुन को जाता है उनका सपूर्ण काव्य जीवन यथार्थ पर आधारित है। अपने काव्य में उन्होंने सामाजिक रूढ़ियों पर करारा व्यंग्य किया। अपने काव्य संग्रह में नागार्जुन ने एक जगह ऐसे पात्र का उल्लेख किया है जो अर्थाभाव के कारण पेचिस की बीमारी से मर गया। यमराज उससे उसके मरने का कारण पूछता है। इस नाटकीय संवाद में नागार्जुन यथार्थवादी दृष्टिकोण का उजागर करते हो।

"ओ रे प्रेत

कड़ककर बोले नरक के स्वामी यमराज

सच-सच बतला

कैसे मरा तू?

भूख से अकाल से"7

उनकी 'आदम का तबेला' कविता में कलकते के मध्यवर्गीय परिवार का दयनीय यथार्थ चित्र, वहीं 'सतरंगे पंखो वाली' में मल्लाहों के दरिद्र जीवन तथा 'रामराज', 'सच-सच-बोलना' आदि कविताएं पूंजीवाद के अत्याचार को प्रकट करती है।

'त्रिलोचन' जी प्रगतिवादी काव्यधारा के अभिन्न अंग के रूप में जाने जाते है। वे एकमात्र अकेले ऐसे कवि हो जो अपनी अनुभूतियों और अभिव्यक्ति के द्वारा मानववादी कवियों के निकट पहुंच जाते है। त्रिलोचन ने अपने काव्य में शोषण, अत्याचार, मजदूरों की सहायता, वर्ण व्यवस्था, पूंजीवाद व्यवस्था पर लिखा है। समाज में नारी की स्थिति को उन्होंने बहुत ही सुंदरता के साथ दिखाया है नारी हमेशा दलित पीड़ित और शोषित रही है। अगर वह विधवा हो जाती है तो उसके दुख का अंत नहीं होता। त्रिलोचन लिखते हैं

"अपनी नोक लौट आता था, निकली नारी

और पास आयी, चीहना अतवरिया थी जो

भेले में हिरा गई थी। बोली लाचारी

मुझे फेर लाई, वह तजकर सरग को।"8

डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन ने भी अपनी कविताओं में समाजवादी दृष्टि को अपनाया। उनके काव्य में जीवन के विभिन्न पत्रों का चित्रण किया गया है। उनकी अधिकांश रचनाएं जीवन और जगत की यथार्थता को दर्शाती है। वे अपने काव्य में स्वतन्त्रता के लिए क्रान्ति की प्रेरणा देते दिखाई पड़ते हैं। उनकी 'प्रलय सृजन', जीवन के गान आदि कविताएँ सामाजिक दुःख दैन्य से युक्त है। उन्होंने अपनी कविताओं में सामाजिक वास्तविकता को दिखाया। एक स्थल पर वे कहते हैं

"बिलखते शिशु की व्यथा पर दृष्टि तक जिनमें न फेंकी

यदि क्षमा कर दूं उन्हें धिक्कार माँ की कोख मेरी,

चाहता हूँ ध्वस कर देना विषमता की कहानी

तो सुलभ सबको जगत में वस्त्र भोजन अन्न पानी।"9

प्रगतिवादी कवियों में मुक्तिबोध का स्थान अग्रण्य है। उन्होंने शोषितों, दलितों, मजदूरों, किसानों, शासकीय कर्मचारियों तथा मध्यमवर्ग के यथार्थ चित्रण अपने काव्य में किये। यथार्थ का जितना बोध मुक्तिबोध को है उतना किसी और को नहीं। उनकी कविताएँ 'चाँद का मुँह टेढ़ा है', 'डूबता चाँद' जैसी कविताएँ महत्त्वपूर्ण है। उनका यथार्थ काल्पनिक न होकर प्रत्यक्ष तथा सत्य से युक्त है। अतीत, वर्तमान व भविष्य में दिखने वाली कुरूपताओं का यथार्थ चित्रण उन्होंने अपने काव्य में किया है।

"आज के अभाव के, व कल के उपवास के

व परसों की मृत्यु के दैन्य के, महा अपमान के,

व लोभपूर्ण भयंकर चिंतो के उस पागल

यथार्थ का दीखता पहाड़ स्याहा।"10

इसी प्रकार शमशेर बहादुर सिंह भी अपने काव्य में सामाजिक यथार्थ को प्रदर्शित करते हैं। कहीं पर तो वे साम्प्रदायिक ताकतों का खुलकर विरोध करते हैं तो कहीं शांति, भाईचारे व सहयोग की कामना करते हैं। उनकी 'भारती की आरती' रचना भारतीय स्वाधीनता का स्वागत है। मध्यवर्ग की दीनता व साम्यवाद का चित्रण भी उन्होंने अपने काव्य में किया है। कला के माध्यम से वे एक स्थान पर मजदूरों की व्यथा का उल्लेख करते है -

www.ignited.in

''ये शाम है, कि आसमान खेत है पके हुए अनाज का लपक उठी' लहू भरी दरातियों की आग है धुआँ-धुआँ सुलग रहा ..... के मजूदर का हृदय।''11

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्रगतिवादी कवियों में हमें सामाजिक यर्थाथवाद के दर्शन होते हैं। पंत, निराला के काव्य में बिम्बात्मक और वैचारिक यर्थाथवाद देखने को मिलता है तो केदार, नागार्जुन, त्रिलोचन, आदि कवियों ने शोषण, शोषित, दलित, सर्वहारा आदि को काव्य का मुख्य विषय बनाया। मुक्तिबोध, दिनकर तथा शमशेर बहादुर आदि कवियों के काव्य में भी प्रगतिवादी स्वर दिखाई दिए। कहीं नारी के प्रति दयनीय दृष्टिकोण तो कहीं पूंजीवाद का विरोध कहीं राष्ट्रीयता की भावना तो कहीं क्रांति का आह्वन, ये सभी प्रगातिवादी काव्य में यथार्थ को प्रस्तुत करने में सफल सिद्ध हुआ है।

संदर्भ

1. पंत, खोज, पृ0 89
2. डॉ. रघुवंश, आधुनिक कवि निराला, पृ0-33
3. प्रकाशचंद गुप्त, कवि निरालाः एक अध्ययन, पृ0-209-10
4. दिनकर, हूंकार, दिल्ली, पृ0-22
5. केदारनाथ अग्रवाल, हे मेरी तुम, पृ0 17
6. वही पृ0-32
7. नागार्जुन, प्रेत का ब्यान, पृ0 42
8. त्रिलोचन शास्त्री, दिंगत, पृ0 52
9. शिवमंगल सिंह सुमन, पथ भूल ना जाना पथिक, हड्डियों का ताप, पृ0 207
10. मुक्तिबोध, चांद का मुंह टेढ़ा है, पृ0 16
11. रमाकान्त शर्मा, छायोवादोत्तर हिन्दी कविता, पृ0 376

Corresponding Author

Seema*

M.A. B. Ed. Lecturer of Hindi, Singh Ram Memorial Senior Secondary School, Umra, Hisar

ranimakkar89@gmail.com